प्रथम अध्याय

"अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रथम अध्याय

''अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

प्रस्तावना :-

साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में अलका सरावगी का नाम बहुत ऊँचा हैं। साहित्यकार जिस वातावरण में रहता है, जो संघर्ष वह अपने जीवन में करता है, अनुभव लेता है, उसी की अभिव्यक्ति वह सर्जनशील कल्पना के द्वारा करता है। इसी आधार पर अलकाजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर उसी प्रकार का प्रभाव दिखायी देता है। उनकी कृतियों से इनका व्यक्तित्व थोडा-बहुत सामने आता है। उनके कार्य में अपने शहर की गंध भी महसूस होती हैं।

संवेदनशील, स्पष्टवादी, बुद्धिमानी स्त्री तथा साहित्य की नई शिल्पकार के रूप में इन्हें जाना जाता है, एकदृष्टि से इनका साहित्य सीमित होने के कारण इनकी जानकारी बहुत कम ही मिलती है।

1.1 व्यक्तित्व :-

1.1.1 जन्म, बचपन :-

साठोत्तरी महिला लेखिका अलका सरावगी का जन्म इ. स. 1960 में कोलकाता शहर में हुआ। इनका बचपन कोलकाता में ही व्यतीत हो गया।

1.1.2 माता-पिता :-

इनकी माता का नाम शकुंलता देवी और पिता का नाम केशवप्रसाद है।

1.1.3 शिक्षा :-

अलका जी की शिक्षा कोलकाता शहर में पूरी हुई है। इन्होंने विवाह के पहले स्नातक की उपाधि प्राप्त की। सन 1988 में दो बच्चों की माँ होते हुए भी उन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। इनका स्नातक का विषय हिंदी न होने के कारण एम. ए. करते समय बहुत समस्याएँ उत्पन्न हुई। फिर भी अलका जी ने स्नातकोत्तर उपाधि प्रथम श्रेणी में हासिल की। अलका जी ने पीएच. डी. की उपाधि कोलकाता विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। इनके शोध-प्रबंध का विषय 'रघुवीर सहाय का काव्य' था। इस प्रकार अलका जी ने पूरी जिम्मेदारियाँ निभाते-निभाते अपनी शिक्षा पूरी की है।

1.1.4 पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन :-

अलका जी का जन्म एक मारवाडी परिवार में हुआ है। मारवाडी समाज में लडकियों को कम पढ़ाया-लिखाया जाता है। अलका जी की दो बहनें हैं, जो अधिक पढ़ी-लिखी नहीं है। अलका जी ने ही स्नातक उपाधि प्राप्त की और उसके बाद उनकी शादी मारवाडी व्यवसायी परिवार के बडे बेटे महेश सरावगी से संपन्न हुई।

अलका जी का परिवार संयुक्त और बड़ा है। घर में सास-ससुर, दो देवर, देवरानियाँ- विभा और ज्योति है। अलका जी को दो संताने है - एक बेटा मयंक और बेटी सलोनी है, जो इनकी रचना के पाठक भी है। इनके पति शालिन और प्रेमपूर्ण स्वभाव के व्यक्ति है। इनका बेटा मयंक अक्षम है।

1.1.5 अन्य विषयों पर अध्ययन :-

इनके आरोग्य और स्त्रियों के प्रश्नों पर लेख समाचार पत्र में प्रकाशित हुए है। इन्होंने हिंदी और बंगाली साहित्य के बीच जो संबंध है, उस पर विचार प्रस्तुत किए है।

1.1.6 साहित्य सृजन की प्रेरणा :-

इन्हें साहित्य लिखने की प्रेरणा उनके बेटे से मिल गयी है। इनका बेटा जो शारीरिक रूप से अक्षम है। वर्षों के इलाज से तथा हर तरह से उसे सामान्य बनाने का उनका संघर्ष है। इसी संघर्ष से उन्हें और इसी वेदना से उनके भीतर रचनात्मकता का प्रभाव पडा है। इसीके साथ उनके पति का भी बडा साथ मिला है।

1.2 कृतित्व :-

साठोत्तरी युवा लेखिका के रूप में अलकाजी को जाना चाहता है, उनका साहित्य कोलकाता शहर के वातावरण से ओतप्रोत है। उनके साहित्य की मुख्य विशेषता यह है कि कोलकाता शहर का वर्णन, नारी प्रधानता और आधुनिक समस्याओं को सामने लाना। इस तरह अपने साहित्य के इन पहलुओं से इन्होंने हमें लाभान्वित किया है।

1.2.1 कहानीकार के रूप में :-

अलका जी ने कुल मिलाकर दो कहानियाँ लिखी है : -

1) कहानी की तलाश में (इ. स. 1996)

2) दूसरी कहानी (इ. स. 2000)

इस प्रकार अलका जी ने दो ही कहानियाँ लिखी है।

1.1.2 उपन्यासकार के रूप में :-

अलका जी ने कुल मिलाकर चार उपन्यास लिखे है -

1) कलिकथा : वाया बाइपास - इ. स.1998

2) शेष कादम्बरी - इ. स.2001

3) कोई बात नहीं - इ. स.2004

4) एक ब्रेक के बाद - इ. स. 2008

उनका पहला उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास' को श्रीकांत वर्मा पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सन्मानित किया गया है।

1.2.3 प्रकाशन के राह पर आनेवाला साहित्य :-

अलका सरावगी ने एक उपन्यास हाथ में लिया है जो द्विभाषिक रूप में है। जिसकी कथा का अंश यह है कि - उसमें एक 17 वर्ष का बालक है। जो मशिनरी स्कुल में पढ़ता है। इसके आधार पर यह उपन्यास है। जिसकी राह में अंग्रेजी और युरोपीय प्रकाशक है।

1.2.4 अनुदित साहित्य :-

1.2.4.1 कलिकथा : वाया बाइपास :-

प्रस्तुत उपन्यास का अनुवाद मरिओला अफ्रीदी द्वारा इटालियन भाषा में अनुवाद हो रहा है। इसी प्रकार फ्रेंच, जर्मन, विभा मौर्य द्वारा स्पॅनिश और पोर्तुगाली में अनुवाद हो रहा है। स्वयं अलका जी ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

1.2.4.2 शेष कादम्बरी :-

प्रस्तुत उपन्यास का बंगला में मिनाक्षी मुखर्जी द्वारा अनुवाद हो रहा है। नेरी पोझा ने इटालियन में अनुवाद किया है। तो अंग्रेजी में 'ओवर टू यु कादम्बरी' ऐसा अनुवाद किया है।

1.2.5 पुरस्कार :-

1. 'कलिकथा : वाया बाइपास' को श्रीकांत वर्मा पुरस्कार (1998)
2. 'कलिकथा : वाया बाइपास' साहित्य अकादमी पुरस्कार (2001)

1.2.6 अलका सरावगी के 'कलिकथा : वाय बाइपास' का संक्षिप्त परिचय :-

अलका सरावगी का उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास' यह उनकी प्रथम रचना है। जिसे साहित्य अकादमी और श्रीकांत वर्मा पुरस्कार (2001) से सम्मानित किया है। इसका अंग्रेजी

में अनुवाद स्वयं अलका जी ने किया है। विभिन्न भाषाओं में अनुदित होकर कुछ ही क्षणों में इस उपन्यास ने जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

युवा लेखिका अलका सरावगी का जन्म कोलकता शहर में हुआ था। अत: 'कलिकथा : वाया बाइपास' उपन्यास में कोलकाता शहर को ही चित्रित किया है, यह बात स्वाभाविक ही है। किशोर बाबू उपन्यास के नायक है। बाइपास ऑपरेशन के बाद किशोरावस्था की दुनिया में पदार्पण करनेवाले सत्तर वर्षीय किशोर बाबू की कथा प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में है। जीवन की उलझनों से जुझतें हुए वे कोलकाता शहर की पैदल चक्कर लगाते हैं। यह एक वर्तुलाकार चक्कर है, जिस में भूत, भविष्य और वर्तमान तदाकर हुआ है। इस कालचक्र की चक्कर किशोर बाबू को पुरखों की दुनिया में ले जाती है, वे अपने परदादा रामविलास बाबू की दुनिया में प्रविष्ट होकर मारवाडी जाति की, स्थिति और गति तथा कोलकता शहर की पूरी कथा कहते है।

किशोर बाबू अपनी एक जिंदगी में तीन जिंदगियाँ जीते हैं। उनकी पहली जिंदगी सन 1940 से 1947 ई. के बीच की है। गांधी भक्त अमोलक के साथ गुजारते है। सन 1947 से 1997 ई. तक की दूसरी जिंदगी है। इन पचास वर्षों की जिंदगी में उनकी पहली जिंदगी की छाया तक नहीं है। बाइपास ऑपरेशन के बाद की उनकी तीसरी जिंदगी है। यह जिंदगी आसपास की स्थिति को उजागर करती है। उपन्यास के शीर्षक का 'बाइपास' शब्द युगधर्म की ओर संकेत करता है। 'बाइपास' का अर्थ समस्या से बचकर काल से सुविधाजनक रास्ते निकालना है। आज की धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक स्थिति में उत्पन्न समस्याओं के प्रति यही स्थिति है।

अंधविश्वास की समस्या पूरे देश में पाई जाती है। कोलकाता महानगर भी इसकी चपेट में आता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में अंधविश्वास उभरकर आया है। किशोर बाबू को पत्नी द्वारा किशोर बाबू के भटकाव को नियति का चक्र मानना, पंडित को उनकी कुंडली दिखाकर दान-दक्षिणा देते रहना, पूजा पाठ का आयोजन करना आदि के रूप में किशोर बाबू की पत्नी का अंधविश्वास उभर उठा है। किशोर बाबू माता द्वारा किशोर की शनिदेवता को सरसों का तेल और कुछ सिक्के दान देने को कहना, अँग्रेजों में भी भारतीय सभ्यता के संदर्भ के कारण अंधविश्वास का बढ़ना, ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा हर साल कालीमाता के मंदिर में जुलूस के साथ जाकर सालाना पाँच हजार रूपये की भेंट चढ़ाना, किशोर के परदादा द्वारा कालीमाता की पूजा करना, कोलकाता शहर को तुफान की चपेट से बचाने के लिए रामविलास के पिताजी द्वारा कुलदेवता की मिन्नते मनाना,

किशोर की मामी द्वारा अपने पति को मैना ठकुरानी से जुदा करने के लिए जादू टोने जैसा प्रयोग करना, आदि अनेक अंधविश्वासीक पात्रों के माध्यम से लेखिका ने इसे चित्रित किया है।

अंग्रेजों ने भारत देश पर डेढ सौ वर्ष हुकुमत की। किंतु तीन सौ वर्षों तक कोलकाता शहर को व्यापार केंद्र बनाया था। छोटे हैमिल्टन (जॉन) रामविलास को अपने जन्म की पूरी कथा बताकर मिश्रित खून की समस्या पर प्रकाश डाला है। रामविलास और उनके बेटे केदार के बीच संघर्ष दिखाते हुए लेखिका ने मारवाडी परिवार की आत्मकेंद्रितता और स्वार्थी नीति को उजगार किया है। रामविलास का भारतमाता के प्रति प्रेम को दर्शाया है। इससे मारवाडी परिवार के मुखिया की आत्मकेंद्रितता और स्वार्थी नीति पर प्रकाश पडता है।

मारवाडी नारी की दयनीय दशा पर अलका सरावगी ने गहराई से चिंतन किया है। किशोर बाबू के हृदय में उत्पन्न वैधव्य की पीडा, विधवा भाभी के प्रति किशोर का प्रेम देखकर किशोर बाबू की पत्नी में उत्पन्न जलन, किशोर बाबू का अपनी बेटियों को पडोस के घरों की लडकियों के साथ खेलने के लिए किया जानेवाला प्रतिबंध, इस स्थिति में पिंजडे में बंद चिडियों की तरह रहने की इनकी मजबूरी आदि बातों से मारवाडी नारी की समस्याएँ उजागर हुई है।

जातीय कट्टरता, कोलकाता शहर की आजादी की माँग, 1940 के आसपास सुभाष बाबू की बगावत, आजाद हिंद सेना की स्थापना आदि की चर्चा उपन्यास में होना समसामायिकत्व की विशेषता को स्पष्ट करती है। किशोर बाबू की विचारधारा के पक्षधर है। किशोर की माँ समन्वयवादी दिखाकर समन्वयवादी भावधारा की विजय दिखाई है।

आधुनिक युगबोध किसी भी साहित्य का एकमात्र मानदंड होता है। प्रस्तुत उपन्यास में मारवाडी समाज की आत्मकेंद्रितता, कोलकाता शहर की दरिद्रता, दूसरे महायुद्ध से मानवी जीवन में आया हुआ बिखराव, प्राकृतिक आपदा, भुखमरी, प्राकृतिक प्रकोपों की पीड़ा का व्यापारियों द्वारा उठाया जानेवाला फायदा, मारवाडी नारी की अशिक्षा, पर्दापद्धति, गांधी हत्या, बँटवारे की पीड़ा, बाबरी मस्जिद हादसा, गांधीवादी अमोलक द्वारा औद्योगिकीकरण का विरोध, सन 1975 की अपातकालीन स्थिति, रूपयों के दामों में आयी गिरावट आदि प्रधान घटनाओं को लेखिका ने उजागर किया है।

उपन्यास के अंतिम पृष्ठों में आजादी के बाद की स्थिति, राबडीदेवी, सोनिया गांधी, इंद्रकुमार गुजराल, एच. डी. देवेगौडा आदि के माध्यम से राजनीति पर व्यंग्य किया है। बौने व्यक्तित्व

राजनीति में आना, विज्ञान के आधार पर भ्रूण हत्याएँ, टेस्ट-ट्युब बेबी जैसी आधुनातन समस्याएँ भी उपन्यास में चित्रित की गई है।

'कलिकथा : वाया बाइपास' उपन्यास में किशोर बाबू की तीन जिंदगियों के माध्यम से देश के तीन पडावों की स्थिति को दर्शाया है। किशोर बाबू का बाइपास युगधर्म को साकार करता है। सुभाषवाद, गांधीवाद, हिंदुत्ववाद आदि के माध्यम से गांधीवाद की आवश्यकता पर बल दिया है। युद्धजन्य स्थिति, सांप्रदायिक तनाव एवं संघर्ष के बीच समन्वयात्मकता का संकेत देनेवाला यह उपन्यास नयी पीढी को प्रेरणा देता रहेगा।

निष्कर्ष :-

1. अलका जी का व्यक्तित्व और कृतित्व अपने जीवन यात्रा के विविध पहलुओं से गुजरता हुआ परिलक्षित होता है। आज के साहित्य में जो महत्त्वपूर्ण नारी जीवन की समस्याएँ है उन्हें अलका जी ने अपने उपन्यासों में उभारा है। अलका जी के व्यक्तित्व पर उनके कोलकाता शहर की छाप दिखायी देती है। उनके साहित्य में उनके मारवाडी समाज का भी प्रभाव दिखायी देता है। जैसे 'कलिकथा : वाया बाइपास' में अलका जी ने मारवाडी समाज की आत्मकेंद्रितता को स्पष्ट किया है। अलका जी का व्यक्तित्व इन सब बातों से उच्चकोटि का दृष्टिगोचर होता है। इस तरह उनका पहला ही उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास' को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है इससे उनकी लेखिका के रूप में अलग पहचान बन गयी है।

2. अलका जी के उपन्यासों में नगरों तथा महानगरों का प्रभाव दिखायी देता है। उनके उपन्यासों के विषय पारिवारिक या नारी जीवन की समस्याओं को लेकर ही होते है। उनके 'कोई बात नहीं', 'शेष कादम्बरी' इन उपन्यासों में ज्यादातर पारिवारिक समस्या को ही चित्रित किया है। परिवार में जो वाद-विवाद होते है उनको समाज के सामने रखना अलका जी के उपन्यास की विशेषता है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास में लेखिका ने एक अक्षम याने शरीर से विकलांग बच्चे की व्यथा को दर्शाया है। अलका जी का बेटा भी इसी व्याधी से ग्रस्त है और वह पूरे आत्मविश्वास के साथ उसे ठीक करने की कोशिश कर रही है।

3. अलका जी एक सशक्त उपन्यासकार और कथाकार के रूप में जानी जाती है। उनकी परिश्रमवृत्ति, आत्मविश्वास से परिपूर्ण महत्त्वाकांक्षी वृत्ति का असर उनके साहित्य पर

दिखाई देता है। इनकी यह वृत्ति उनके व्यक्तित्व को परखने पर झलकती है। एक जिम्मेदार बहू और पत्नी, माँ सभी की झलक इनमें दिखायी देती है। यह सब ख्याति उन्हें अपने पति के सहयोग से मिली है, इन सब कर्तव्यों में इनका बहुत बडा साथ मिला है।

4. इनके साहित्य में समाजोपयोगी चित्रण बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। इसलिए उन्हें अपने पहले उपन्यास (कलिकथा : वाया बाइपास - 1998) को पुरस्कारों से सम्मानित किया। इसी कारण अलका जी का व्यक्तित्व या उन्हें देखने का नजरियाँ ही बदल गया। उनका साहित्य बहुत पहलुओं से गुजरा है। इनकी पुरस्कृत कृति 'कलिकथा : वाया बाइपास' इसे कई भाषाओं में अनूदित किया गया। इससे इनकी जनप्रियता कितनी महान है इसका पता चलता है। अलका जी ने अपने साहित्य जगत में बहुत कम लेखन किया है लेकिन वह बहुमूल्य है।

5. अलका जी युवा लेखिका में सबसे सफल लेखिका मानी जाती है। उनके साहित्य लिखने का ढंग सबसे अलग है। उनके साहित्य में एक संवेदनशील भाव नजर आते है जिससे इनका साहित्य उँचा उठा है। इन्होंने अपनी रचनाओं में सबसे ज्वलंत और संवेदनशील प्रश्न उठाए है। उदा. 'कलिकथा : वाया बाइपास' में राजनीति के बौने व्यक्तित्व, प्राकृतिक प्रकोप, भुखमरी, औदयोगिकीकरण की समस्या, टेस्ट-ट्युब बेबी, भ्रृण हत्याएँ आदि संवेदनशील और ज्वलंत समस्याओं को लेखिका ने उपन्यासों में चित्रित किया है।

6. इनके साहित्य के विषय नारी को बढ़ावा देनेवाले है। 'शेष कादम्बरी' में इन्होंने नारी के अकेलेपन की समस्या को प्रमुख मानकर उसे प्रस्तुत किया है। 'कोई बात नहीं' में एक ऐसे बच्चे की कहानी को प्रस्तुत किया है जो शरीर से विकलांग है। इस तरह साहित्य के ऐसे विषयों से इनका साहित्यजगत सम्मानपूर्वक लोगों के सामने आया है। इसलिए उनके साहित्य को यथोचित सम्मान भी मिला है। पुरस्कारों के साथ-साथ जनप्रियता एवं पाठकों की प्रशंसा पाने में अलका जी सफल रही हैं। क्योंकि आज अनुसंधान के क्षेत्र में उस पर शोध-कार्य चल रहा है। यही इसका प्रमाण है।

-----x-----